आने वाला कल

कड़ी - 41

इंडिया, स्किल इंडिया और डिजिटल इंडिया
पीएम और एआई की पहल

शोध एवं लेखन : नेहा त्रिपाठी
संकल्पना और समन्वय : डॉ. बी.के. त्यागी

सार: एआई क्रांति में भारत की बड़ी हिस्सेदारी है। दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी के साथ सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में भारत तेज़ी से विश्व पटल पर उभर रहा है। देश के प्रमुख प्रौद्योगिकी संस्थान, जैसे आईआईटी, एनआईटी और आईआईआईटी, एआई शोधकर्ताओं और स्टार्ट-अप को नई दिशा देने की क्षमता रखते हैं। भारत अपनी "एआई फॉर ऑल" रणनीति के साथ, एआई-प्रशिक्षित कार्यबल और उभरते स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का एक विशाल समूह है... साथ ही एआई के पास मुश्किलों का समाधान निकालने का अनूठा अवसर भी है जो स्वास्थ्य सेवा, कृषि, विनिर्माण, शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला सकता है। सरकार की पहल जैसे स्किल इंडिया और डिजिटल इंडिया को बनाने के पीछे दूरदर्शी सोच है। और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारे भविष्य का दर्पण है। जब हम कल की बात करते हैं, तो हमें इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जोड़ना होगा। स्किल इंडिया या डिजिटल इंडिया को लेकर की गई पहल में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को जोड़कर इसे और बेहतर बनाया जा सकता है। ये कैसे किया जा सकता है , इस पर इस एपिसोड में उदाहरणों के साथ चर्चा की गई है।

प्लॉट : ये एपिसोड एक सपने की शुरुआत के बारे में है, जिसे एक सर्टिफिकेट के रूप में इसकी आधारशिला मिली है। के साथ एपिसोड शुरु होता है जहां एक सर्टिफिकेट वितरण समारोह चल रहा है... जिसमें सभी स्नातक छात्रों के नाम की घोषणा की जा रही है। शशांक के नाम की घोषणा होती है... उसके द्वारा सर्टिफिकेट स्वीकार करने की आवाज़ आती है। वो सर्टिफिकेट प्राप्त करता है और उसके दोस्तों द्वारा उसकी सराहना की जाती है। वो अब अपने सपनों की ओर पहला कदम पूरा करने के लिए भगवान को धन्यवाद दे रहा है। वह अपनी माँ को पुकारते हुए घर पहुँचता है।

किरदार :

पारुल दीदी - महिला सरकारी प्रतिनिधि (उम्र 30+ वर्ष)
डॉ. डोगरा - AI विशेषज्ञ (50+ वर्ष)
प्रो. शुक्ला - पिता (उम्र 50+ वर्ष)
श्रीमती शुक्ला - गृहिणी (उम्र 40+ वर्ष)
शशांक - बेटा (उम्र 25+ वर्ष)
सुनीता - बेटी (उम्र 20+ वर्ष)

(उत्साह के साथ कदमताल करते हुए)

शशांक: माँ... मुझे मेरा सर्टिफिकेट मिल गया ... मैंने हथकरघा (हैंडलूम) और हस्तशिल्प (हैंडिक्राफ्ट) में अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया है ... अब मैं एक पेशेवर हूँ जिसने भारत सरकार के स्किल इंडिया मिशन की मदद से ये नए स्किल सीखे हैं...

सुनीता: वाह... भाई... बधाई हो... बहुत बढ़िया है कि आपको सर्टिफिकेट मिला... लेकिन आपको इस क्षेत्र के बारे में कुछ पता भी है? या बस सर्टिफिकेट ले लिया है... **(**हंसती है**)**

शशांक: मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ ... मैं इस क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहता हूँ... मैं एक उद्यमी बनना चाहता हूँ...

श्रीमती शुक्ला: बहुत-बहुत बधाई हो बेटा... भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें और नई ऊँचाइयों तक पहुँचने में तुम्हारी हमेशा मदद करें...

शशांक: भगवान के साथ-साथ इस सब के पीछे आपका भी तो आशीर्वाद है ...

प्रो. शुक्ला: तो, ये सब माँ का आशीर्वाद है... और पापा का क्या...

शशांक: पापा... आपका आशीर्वाद भी है... मेरा मतलब था आप दोनों का आशीर्वाद है...

प्रो. शुक्ला: तो, आगे क्या सोचा है ?

श्रीमती शुक्ला: मैंने आज पारुल को घर बुला लिया है... मुझे पता था कि मेरे बेटे को सर्टिफिकेट मिलेगा और अगली चीज जो आप उससे पूछेंगे वो यही होगी कि आगे का क्या सोचा है?

शशांक: ये तो बहुत अच्छा किया आपने... पारुल दीदी यहाँ आएंगी... तो बहुत मज़ा आएगा... वही सबसे अच्छा ये बता पाएंगी कि मुझे आगे क्या और कैसे करना चाहिए... वही मेरा मार्गदर्शन करेंगी...

सुनीता: मेरा भी... मैं उनसे ज्वेलरी डिजाइनिंग की संभावनाओं के बारे में पूछूंगी...

श्रीमती शुक्ला: हाँ... हाँ पूछ लेना... वो सरकार के लिए काम करती है और एक या दूसरे तरीके से डिजिटल इंडिया और स्किल इंडिया मिशन के बारे में लोगों को जानकारी देती है... उन्हें शामिल होने के लिए प्रेरित करती है ... इसलिए वो तुम्हें सही तरीक़े से समझा पाएगी कि तुम्हें क्या करना चाहिए... तुम्हारा अगला कदम उठाने में मदद करने के लिए वो सही व्यक्ति होगी ... लेकिन इससे पहले कि वो आ जाए, चलो दोपहर का खाना खा लेते हैं...

(संगीत... दरवाज़े की घंटी बजती है - दरवाज़ा खुलने की आवाज)

पारुल दीदी: नमस्ते अंकल... नमस्ते आंटी... कैसे हैं आप लोग?

श्रीमती शुक्ला: खुश रहो पारुल... अंदर आ जाओ...

प्रो. शुक्ला: हम सब ठीक है... तुम कैसी हो?

पारुल दीदी: मैं ठीक हूँ अंकल... शशांक और सुनीता कहाँ हैं?

श्रीमती शुक्ला: हमने बस अभी अपना लंच ख़त्म किया है... वो लोग हाथ धो रहे हैं... पता है आज शशांक को सर्टिफिकेट मिल गया...

पारुल दीदी: वाह... ये तो बहुत अच्छी बात है... तो अब वो स्किल इंडिया प्रोग्राम के तहत ट्रेन्ड/प्रशिक्षित है...

शशांक: हाँ दीदी... नमस्ते...

पारुल: बहुत बधाई हो तुम्हें...

शशांक: शुक्रिया... और अब जैसा कि मैंने आपको पहले भी बताया था कि मैं कारीगरों के साथ मिलकर अपना काम शुरु करना चाहता हूं... मैं सारे कारीगरों को एक ही छत के नीचे लाना चाहता हूँ... और उन्हें काम का सही मुआवजा... और ख़ुद को साबित करने के लिए सही मंच देना चाहता हूं...

श्रीमती शुक्ला: पारुल... ये तो इस बात पर अड़ा है कि वो रेखा और उसके परिवार के साथ काम करेगा... इतना ही नहीं उसने रेखा से ये भी कह दिया है कि वो उसके इलाके से और महिलाओं को साथ लाए...

पारुल दीदी: रेखा कौन ??? आपके घर में सफाई-बर्तन का काम करने वाली ?

सुनीता: हाँ दीदी... रेखा दीदी तो बहुत ही सुंदर कढ़ाई-बुनाई करती हैं...

पारुल दीदी: अरे सुनीता... कैसी हो?

सुनीता: मैं ठीक हूँ दीदी... मेरे मन में बहुत सारे सवाल हैं जो मैं आपसे पूछना चाहती हूँ ...

पारुल दीदी: ज़रूर ... पहले मुझे एक गिलास पानी पिलाओ... फिर बैठ कर तुम्हारे सारे सवाल सुनूंगी... और उनके जवाब भी दूंगी...

सुनीता: ठीक है

प्रो. शुक्ला: मुझे आत्मनिर्भर बनने के लिए व्यवसाय का ये आइडिया अच्छा लगा... शशांक जो योजना बना रहा है... अग सब ठीक से होता है तो ये व्यवसाय उसे आत्मानिर्भर बना देगा... लेकिन ये कैसे होगा?

सुनीता: ये रहा आपका पानी... और मैंने चाय के लिए पानी भी गैस पर चढ़ा दिया है...

(पारुल के पानी पीने की आवाज़ और फिर रुक कर बात करना)

पारुल दीदी: ये तो तुमने बहुत अच्छा किया सुनीता... हम जो बातचीत कर रहे हैं उसके बीच में चाय की तो बहुत ज़रूरत पड़ेगी... (सब हंसते हैं) अंकल मैं पूरे भारत में लंबे समय से स्किल इंडिया कार्यशालाएं चला रही हूं और आपके इलाके में भी मैंने पिछले एक साल में कुछ कार्यशालाएं की है... मैंने कई लोगों को प्रशिक्षित किया है... वे सब भी शशांक के इस काम में जुड़ सकते हैं... वो सब शशांक के लिए मददगार साबित होंगे...

प्रो. शुक्ला: लेकिन घर-घर जाना और काम ढूँढना तो ठीक रास्ता नहीं है... और आप कोई भी चीज़ बनाओगे तो उसे बेचने के तरीक़े भी तो सोचने होंगे... इतना ही नहीं विपणन रणनीति... गुणवत्ता नियंत्रण... अलग-अलग जगहों से आने वाले ऑर्डर्स और उनका प्रबंधन... ये सब कैसे होगा...

पारुल दीदी: शशांक का आइडिया अच्छा है... आप चिंता मत कीजिए... ये सब चीजें तो संभाली जा सकती हैं... इसके लिए कई आधुनिक तरीके हैं...

डॉ. डोगरा: बिल्कुल सही कहा आपने... ये कोई बड़ी बात नहीं है प्रोफेसर... शशांक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इसेतमाल कर सकता है... आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उसकी कई तरह से मदद कर सकता है...

प्रो शुक्ला: नमस्ते डॉक्टर साहब... आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विशेषज्ञ... आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

डॉ. डोगरा: मैं तो बस दूध लाने के लिए नीचे जा रहा था... आप लोगों की बातें सुनी तो बस रुक गया...

श्रीमती शुक्ला: नमस्कार डॉक्टर साहब... आइए... बैठिए...

सुनीता: और ये लीजिए मैं चाय और नाश्ता भी ले आई हूँ...

डॉ. डोगरा: ये तो तुमने बहुत अच्छा काम किया है बेटा... मुझे चाय ही तो पीनी थी... बनाने गया तो देखा दूध कहूँ है... इसलिए दूध लेने जा रहा था..

श्रीमती शुक्ला: अरे वाह... आप चाय बना रहे थे... श्रीमती डोगरा और बच्चे कहां हैं?

डॉ. डोगरा: वो किसी काम से गए हैं ... मुझे घर पर अकेला छोड़ दिया है...

श्रीमती शुक्ला: ठीक है, लेकिन घर से काम करने का ये चलन आपको अकेला महसूस नहीं होने देता है...

(सभी हंसते हैं)

डॉ. डोगरा: सही कहा आपने... वैसे आप लोग बात क्या कर रहे हैं...

शशांक: मैं अपनी कारीगरों की फर्म शुरू करना चाहता हूँ... पारुल दीदी यहाँ मेरी मदद करने के लिए आई हैं...

प्रो. शुक्ला: अरे... मैं आप दोनों का परिचय कराना तो भूल ही गया... डॉ. डोगरा, ये पारुल है... ये स्किल इंडिया और डिजिटल इंडिया की पहल को बढ़ावा देने के लिए सरकार के साथ काम करती है... और पारूल ये हैं डॉ. डोगरा... आप एआई एक्सपर्ट हैं...

पारुल दीदी: नमस्ते सर... एआई हमारा भविष्य है... आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा...

डॉ. डोगरा: हाय पारुल ... सरकार की स्किल इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी पहल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस... ये तो जानलेवा कॉम्बो हो सकता है...

पारुल दीदी: बिल्कुल सर... सही कहा आपने... शशांक जैसे युवाओं के लिए स्किल इंडिया है... और डिजिटल कनेक्टिविटी बढ़ाने और शासन को और अधिक पारदर्शी बनाने के लिए डिजिटल इंडिया पहल ने अद्भुत परियोजनाएं शुरू की हैं... ई-हॉस्पिटल, डिजीलॉकर, ई-साइन फ्रेमवर्क, आदि...

डॉ. डोगरा: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना स्किल इंडिया और डिजिटल इंडिया का मौजूदा दृष्टिकोण होना चाहिए...

शशांक: मुझे भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में बहुत दिलचस्पी है... और डिजिटल इंडिया की परियोजनाओं के बारे में मैं भी जानता हूँ... मैंने अपना डिजिटल हस्ताक्षर बनाया हुआ है... जिससे कि मैं दस्तावेजों पर ऑनलाइन हस्ताक्षर कर सकूं ... अब, एआई मेरे फर्म में मेरी मदद कैसे कर सकता है?

प्रो. शुक्ला: हां, डॉ. डोगरा... मैं भी चाहता हूं कि शशांक डिजिटल दुनिया के साथ जुड़कर अपनी नई शुरुआत करे...

श्रीमती शुक्ला: शशांक ग्रामीण कारीगरों और कारीगरों को समकालिक तरीके से काम करने के लिए शामिल करना चाहती हैं ... इससे उन्हें पैसा, नाम और शोहरत कमाने में मदद मिलेगी ... इसलिए, वे हमारे इलाके में दैनिक ग्रामीणों, घर की नौकरानियों आदि से संपर्क कर रहे हैं। एक या दूसरे कौशल में अच्छा ... और पारुल कुछ प्रशिक्षित कारीगरों का विवरण भी साझा कर रही है जो शशांक की फर्म में शामिल हो सकते हैं ...

पारुल दीदी: बेशक... लोग आत्मनिर्भर होना चाहते हैं और सरकार के सपने को साकार करने में मदद करना चाहते हैं...

डॉ. डोगरा: इसमें कोई दो राय नहीं है... लेकिन हम दो चीजों को ध्यान में रखते हुए ही एक व्यवसाय की योजना बनाते हैं... एक तो शशांक का लक्ष्य है, ग्रामीण कारीगरों को प्रेरित करना और उन्हें एक मंच देना... दूसरा लक्ष्य है व्यावसायिक लाभ...

सुनीता: यहां तक कि मैं भी मुनाफा कमाना चाहती हूं ... मैं अपनी पढ़ाई पूरी कर चुकी हूं और ज्वैलरी डिजाइनिंग में स्किल ट्रेनिंग का चुनाव करना चाहती हूं ... देखिए, ये डिजाइन मैंने अब आप लोगों की बात सुनते हुए ही बनाए हैं...

पारुल दीदी: ये तो बहुत ही अच्छी हैं सुनीता... तुम अपने भाई की फर्म के लिए काम की साबित हो सकती हो... शशांक अपने फ़र्म के कारीगरों में तुम्हें शामिल करेगा और तुम अपने साथ अपने जैसे और युवाओं को शामिल कर सकती हो...

डॉ. डोगरा: और जैसा कि मैं कह रहा था... आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की व्यावसायिक मुनाफ़े में बड़ी भूमिका हो सकती है... 2035 तक एआई के प्रभाव को लेकर किए गए कई अध्ययनों में कहा गया है कि किसी देश की आर्थिक वृद्धि अब उसकी पूंजी से नहीं बल्कि उसकी परिवक्वता के द्वारा मापी जाएगी। सारे अध्ययन इस ओर इशारा करते हैं कि एआई अगले पंद्रह सालों में कंपनियों के मुनाफ़े को 35% से ज़्यादा बढ़ा सकता है...

शशांक: ये सुनने में बहुत अच्छा है... मुझे लग रहा है कि मैं पहले से ही एक बिजनेस टाइकून बन गया हूं ... मैं निश्चित रूप से एआई को अपने व्यवसाय में शामिल करना चाहता हूँ... सरकार भी हमें तमाम भाषाओं में प्रशिक्षण देती है... और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इंटरनेट ऑफ थिंग्स की मदद से हम नए दौर के कौशल सीख सकते हैं... और हमें नौकरी के नए अवसर मिल सकते हैं...

सुनीता: मैं एआई कैसे सीख सकती हूं?

डॉ. डोगरा: आपको एआई सीखने की जरूरत नहीं है... ये बहुत तकनीकी है... इसके लिए एआई विशेषज्ञ हैं जो आपके लिए चीजें विकसित करते हैं... आपको बस एआई का उपयोग सीखने की जरूरत है...

प्रो. शुक्ला: मेरी एकमात्र चिंता ये है कि क्या शशांक ये सब मैनेज कर पाएंगे ?

डॉ. डोगरा: बेशक वो कर सकता है और उसे करना चाहिए... लेकिन हमें एक बात नहीं भूलनी चाहिए... डिजिटल दौर में एआई तकनीक जिस तरह से काम कर रहा है वो काफ़ी नहीं है... अभी भी हमें इंसानी मदद की ज़रूरत पड़ती है... इंसानों द्वारा दी गई जानकारी और इंसानों की कार्यकुशलता पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल निर्भर करता है...

पारुल दीदी: ये सच है... और ये किसी भी आइडिया और उसे अमल करने की हर कोशिश के पीछे इंसान का हाथ है... हमें एआई का समर्थन मिलता है, लेकिन एआई के द्वारा चीज़ों को पूरी तरह नियंत्रित नहीं किया जा सकता है... बल्कि वे हमारे काम को बेहतर तरीक़े से करने में हमारी मदद करते हैं...

सुनीता: मेरा मित्र एक AI विशेषज्ञ बनना चाहता है ... इसलिए वो मेरे ज्वैलरी डिजाइनिंग के व्यवसाय में मेरी सहायता कर सकता है...

डॉ. डोगरा: हां, हाई-टेक आइडिएशन और प्रोग्रामिंग की मदद से वो कुछ खास तरीके विकसित कर सकते हैं, जो आपके काम को आसान बनाने में मददगार साबित हो...

सुनीता: एआई सबसे अच्छा है...

श्रीमती शुक्ला: लेकिन जितना मुझे पता है, सभी एआई गतिविधियों के लिए हमें इंटरनेट की आवश्यकता होती है ... हालाँकि इन दिनों डिजिटल कनेक्टिविटी बहुत अच्छी है... वाई-फाई हॉटस्पॉट हर जगह उपलब्ध हैं... मैं अपने घर में लगे सीसीटीवी कैमरों की तस्वीरें तब भी देख सकती हूँ जब मैं घर से दूर हूं... लेकिन इन ग्रामीण लोगों को इंटरनेट कैसे मिलेगा...

पारुल दीदी: जरूरी नहीं ... नया AI सिस्टम बिना इंटरनेट के भी काम कर सकता है ... सही कहा न डॉ डोगरा?

डॉ डोगरा: हाँ... बिल्कुल...

सुनीता: (बीच में बोलते हुए) मैं एआई की मदद से ज्वैलरी डिजाइनिंग कर सकती हूं? मैं ख़ास तौर से पारंपरिक ज्वैलरी डिज़ाइन करना चाहती हूं...

डॉ. डोगरा: पारंपरिक ज्वैलरी-डिजाइनिंग को फिर से हमारे जीवन में शामिल करने के लिए मशीनों की मदद ली जा रही है... स्टील और पीतल के गहने डिजाइन करने में एआई की भूमिका का पहले से ही पता लगाया जा चुका है... और अब पारंपरिक गहनों में पत्थर का इस्तेमाल करके डिजाइन बनाने में एआई का इस्तेमाल किया जा सकता है...

सुनीता: पत्थर की ज्वैलरी में भी... मुझे तो इस तरह की ज्वैलरी बहुत पसंद है और मैं अपने बनाए हुए डिजाइन में पत्थरों का इस्तेमाल करना चाहती हूँ...

डॉ. डोगरा: मशीनों की मदद से ऐसा करना आसान हो जाता है और इसमें समय भी बहुत कम लगता है... साथ ही एआई की मदद से एक ही ज्वैलरी में अलग-अलग तरह के पत्थरों का इस्तेमाल करने की चुनौती को भी आसानी से अंजाम दिया जा सकता है...

सुनीता: हाँ... पत्थर आकार में अलग-अलग तरह के होते हैं... उनकी रंग और बनावट भी अलग होती है... और किसी भी ज्वैलरी में इन आकारों की व्यवस्था कैसे की जा सकती है, इसके अलग-अलग तरीक़े हो सकते हैं... ये बहुत चुनौतीपूर्ण है लेकिन मुझे इसमें मज़ा आता है...

श्रीमती शुक्ला: तो मेरा बेटा पारंपरिक और आधुनिक का फ्यूजन कपड़ों में करेगा और मेरी बेटी ऐसा ही फ्यूज़न ज्वेलरी में करेगी... मुझे पूरा यक़ीन है कि ये दोनों रही सफल होंगे और मुझे नए-नए तरीक़े के कपड़े और ज्वैलरी पहनने को मिलेंगे...

शशांक: अरे... ये क्या बात हुई... हम यहां मेरे काम को लेकर बात करने के लिए बैठे हैं... और ये सुनीता बीच में अपनी बात लेकर बैठ गई...

सुनीता: माँ, भाई को बोलों कि मेरे बारे में ऐसे बात न करे... और वो भी सबके सामने...

श्रीमती शुक्ला: शशांक उसे छेड़ना बंद करो... यहाँ हर कोई आप दोनों के बारे में चिंतित है... और आप दोनों के बारे में बात कर रहा है...

पारुल दीदी: हाँ और एआई भी तुम दोनों की मदद करेगा...

शशांक: मैं भी यही समझने की कोशिश कर रहा हूं कि एआई मेरी मदद कैसे कर सकता है...

डॉ. डोगरा: ये पूरी तरह से इस बात पर निर्भर करता है कि आप एआई से किस तरह की मदद चाहते हैं...

पारुल दीदी: सर, मुझे लगता है कि हथकरघा और हस्तकला कारीगरों के लिए सबसे बड़ी चिंता होती है डिजाइनिंग की...

शशांक: हाँ... मैं इस बात को समझता हूँ इसलिए मैं तो एक डिजाइनर को काम पर रखने की सोच रहा था... और अब आप मुझे बता रहे हैं कि मेरी इस समस्या का हल एआई के पास है...

डॉ. डोगरा: हां ... एआई की मदद से आप न सिर्फ़ अच्छे डिज़ाइन चुन सकते हैं... बल्कि नए और ज़रूरत के मुताबिक़ डिज़ाइन्स बना भी सकते हैं... इससे कारीगरों को अलग-अलग तरह के डिज़ाइन मिलेंगे और वो उनकी मदद से नई और समकालीन चीज़ें तैयार कर सकेंगे...

श्रीमती शुक्ला: एआई तो डिज़ाइन बना देगा लेकिन क्या ये कारीगर इन डिज़ाइन्स को समझ सकेंगे... इन्हें असल ज़िंदगी की चीज़ों में बदल सकेंगे... मेरा मतलब है...

मैं समझना चाह रही हूँ कि क्या जल्द ही मैं एक एआई के द्वारा डिजाइन की गई साड़ी या चूड़ी पहनूंगी?

पारुल दीदी: बेशक, मैंने कहीं पढ़ा है कि एआई में शिल्प कारीगरों के लिए डिजाइन के अवसरों को बढ़ाने की क्षमता है और जिससे समकालीन बाजार की जरूरतों के अनुसार बेहतर विपणन उत्पाद का उत्पादन करके और इस तरह, प्राचीन भारतीय कला रूपों को बचाने के लिए अपने राजस्व में वृद्धि होती है। लुप्त होती से **...**

सुनीता: अरे वाह... तो इसे ऐसे भी देखा जा सकता है कि नई पीढ़ी पिछली पीड़ी से मिली विरासत को न सिर्फ़ बचा रही है बल्कि उसे एक कदम आगे जाकर बेहतर भी बना रही है...

डॉ. डोगरा: इन तकनीकों को भारत भर के समुदायों ने अपनाया है... और इसकी मदद से बेहतर चीज़ें बनाकर बाज़ार में उतारा है... और उन्हें इसके लिए बहुत सारी तारीफ़ें और अच्छी खांसी क़ीमत भी मिली है...

प्रो शुक्ला: तो, ये आगामी उद्यमियों के लिए फायदेमंद होगा...

पारुल दीदी: इतना ही नहीं ... ये उन्हें मार्केटिंग और प्रचार में भी मदद करेगा... उन्हें उनके भावी ग्राहकों तक पहुँचने से लेकर सामान को सही तरीक़े से लोगों तक पहुँचाने में भी अहम भूमिका निभाएगा...

श्रीमती शुक्ला: आप लोगों ने बात को अच्छी तरह समझा तो दिया है लेकिन अभी एक बात फिर भी समझ नहीं आई... और वो ये कि कैसे ग्रामीण या ज्यादातर अशिक्षित वर्ग के लोग जैसे कि मेरे घर में काम करने वाली रेखा, उसके दोस्त और पड़ोसी एआई आधारित डिजाइनिंग को समझेंगे और उसके हिसाब से काम करेंगे...

पारुल दीदी: आप इसकी बिल्कुल चिंता मत कीजिए... हम अपने कार्यक्रमों में कारीगरों को एआई द्वारा बनाए गए डिजाइन के अनुसार काम करना सिखाते हैं... और सबसे अच्छी बात ये है कि वो पारंपरिक डिज़ाइन का ध्यान रखते हुए इसे अपने तरीके से करते हैं...

प्रो. शुक्ला: जिससे हाथों से बनी चीज़ों का मज़ा भी बना रहे और वो पारंपरिक और आधुनिक का बेजोड़ संगम भी हो...

डॉ. डोगरा: यही कारण है कि हम जैसे एआई के विशेषज्ञों का मानना है कि अभी भी इस क्षेत्र में इंसानों की जगह लेने में मशीन को बहुत समय लगेगा और इसे लंबा रास्ता तय करना होगा...

शशांक: बेहतरीन डिज़ाइनिंग... और फिर व्यावहारिक रूप से संभव उत्पाद... ये सब जल्द ही संभव हो जाएगा... सबसे पहले मैं रेखा दीदी को और उनके दोस्तों के साथ बैठूँगा... जिससे कि हम उनके साथ अगले कदम पर चर्चा कर सकें...

पारुल दीदी: जब आप लोग इन चीजों की योजना बनाएँ तो मुझे भी बताना... मैं भी इसमें शामिल हो जाऊंगी...

श्रीमती शुक्ला: हाँ पारुल... तुम ज़रूर इनके साथ रहना... यहाँ तक कि मैं भी इसका हिस्सा बनना चाहूँगी और जितना मुझसे हो सकेगा इनकी मदद करूंगी... आखिर मुझे इनके लिए मॉडलिंग करनी है... इनके सारे डिज़ाइन्स सबसे पहले मैं ही तो पहनूँगी और पसंद-नापसंद भी बताऊँगी...

(सभी हंसते हैं)

सुनीता: मैं भी आऊंगी...

शशांक: हम पिकनिक के लिए नहीं जा रहे हैं... ये ज़रूरी काम है...

प्रो. शुक्ला: उसे भी अपने साथ सीखने दो ...

डॉ. डोगरा: आज की बातचीत में मज़ा आ गया... बहुत कुछ नया जानने और सीखने को मिला है... क्यों शशांक और सुनीता... मेरी शुभकामनाएं तुम दोनों के साथ हैं...

शशांक: धन्यवाद अंकल... इसमें मुझे आपके मार्गदर्शन की भी ज़रूरत होगी... और अगर संभव हो तो मुझे कुछ एआई विशेषज्ञों के बारे में भी बताइएगा जो डिजाइनिंग में मेरी मदद कर सकें...

डॉ. डोगरा: बिल्कुल... मैं तुम्हें जल्द ही बताता हूं... तुम भी मुझे अपने काम के बारे में अपडेट करते रहना... अब मैं चलता हूँ... जल्द ही फिर मुलाक़ात होगी...

पारुल दीदी: हाँ अब मुझे भी चलना चाहिए...

(सभी ने बाय बाय कहा)

(अंतिम संगीत)